निर्माणका नयां सम्वतसर

माननीय गृह, परराष्ट्र तथा
राजदरबार सम्बन्धी मन्त्री
डा. तुलसी गिरीका
रेडियो वक्तव्य

माननीय गृह, परराष्ट्र तथा
राजदरबार सम्बन्धी मन्त्री
डा. तुलसी गिरीका
रेडियो वक्तव्य

माननीय गृह, परराष्ट्र तथा राजदरबार सम्बन्धी मन्त्री डा. तुलसी गिरीका रेडियो वक्तव्य

प्यारे भाइयों तथा बहनों,

नेपालमें एक युगका प्रादूर्भाव हो रहा है। यह नयाँ युग है– हमारी राष्ट्रिय आकांक्षाओंका, देशविकासका, देशनिर्माण एवं राष्ट्रिय जागृतिका। यह नवीन सम्वत्सर हमारे देशके इतिहासमें एक सुखद युगके नए अध्यायकी श्रृष्टि करेगा। यह नवयुग हमारी आकाँक्षाओंकी पूर्तिके लिए वरदान लेकर उपस्थित हो रहा है। लोक–कल्याणकारी व्यवस्थाकी स्थापना होगी। राष्ट्रिय एकता एवं चेतनाकी लहरें हिलोरें लेंगी। राष्ट्रका भाग्योदय होगा। हमारी दीर्घकालीन दरिद्रता दूर होगी। अशिक्षा मिटेगी। कोई शोषण दमन तथा उत्पीडनके शिकार नहीं होंगे। नागरिकोंके जीवन तथा धनकी पूर्ण सुरक्षा होगी। न्याय उपलब्ध होगा। किसीके अधिकारोंका हरण नहीं किया जाएगा। किसीके सम्मानकी उपेक्षा नहीं की जाएगी। रोटी रोजीकी अभिलाषा पूरी होगी। जीविकोपार्जनके लिए पराए देशोंमें जानेकी जरूरत नहीं रहेगी।

विदेशियोंके पहरेदार बनकर गुजरवसर करनेकी गुंजाइश नहीं रहेगी । रोजी रोटीकी समुचित व्यवस्था होगी । भ्रष्टाचारका नामोनिशान मिट जायगा । योग्यताकी कदर होगी । राष्ट्रिय सम्पत्तिका सदुपयोग होगा । झूठ, प्रपंच तथा फरेबसे कोई फायदा नहीं उठा सकेगा । शोषण समाप्त होगा । सबको उन्नतिके लिए समान अवसर प्राप्त होगा । व्यक्तिगत स्वार्थके लिए कोई राष्ट्रकी उन्नतिको अवरूद्ध नहीं कर पायेंगे । देशद्रोही एवं देशघाती तत्व निर्मूल होंगे । आत्म विकास तथा देशोत्थानके कार्यमें सबको समान हक और अवसर प्रदान किए जायेंगे । जनजीवन सुखसम्पन्न बनेगा । संक्षिप्तमें, यह नवयुग नेपालके अस्तित्वके शोधके लिए सहायक सिद्ध होगा ।

एक सौ चार वर्षों तक निरंकुश तथा शोषक पारिवारिक राणा शासनके पैरोंतले नेपालको रौंदा गया था । शोषण रहित समाजकी नींव डालने की उसकी तीव्र लालसा थी । इस पवित्र उद्देश्यकी प्राप्तिके लिए कितनोंने अपने प्राणोंकी आहुति दी और अमर शहीद बने और कई विभूतियोंने कारागारकी घुटनमें अपने जीवनको जर्जरित किया । कितनोंको अपने घरबार और सम्पत्तिसे हाथ धोने पडे । अन्तमें राजा एवं प्रजाके त्याग और तपस्याके चलते १९५१ ई० की क्रांतिका सूत्रपात हुआ । क्रांति हुई और उसके साथही देशमें विभिन्न ,वादों, की बाढसी आगई । नए नए नारे गढे गए और रूप-रूपके नेता दिखाई पडे । क्रांतिके पश्चात एक नई व्यवस्था होगी, स्थिति ठीक होगी, सुख–चैनकी वर्षा

होगी, जनताका कल्याण होगा, देश प्रगतिपथपर अग्रसर होगा, इत्यादि जनताकी आशाएं क्रमशः कुम्हलाती गई। क्रांतिकालमें जनबलका जो उद्दाम स्रोत फूट पडा, जनसहयोग तथा जनताके अदम्य उत्साहकी जो लहरें उठीं वे निरुद्देश्य एवं निरर्थक सिद्ध होने लगीं। नाना भांतिके नेताओं की नारे-बाजी से जनता पथभ्रांत होगई। एकके बाद एक राजनीतिक प्रयोग किए गए, परंतु सभी असफल प्रमाणित होतेगए। असुरक्षा, शंका तथा निराशाका वातावरण व्याप्त होगया। अस्थिरता, अविश्वास एवं आडम्बरसे देशका वातावरण धूमिल हो उठा। राजनीतिक दलोंकी खींचातानी, फूट, गालीगलौज और आपसके तू-तू मैं-मैं ने देशकी उच्च मनोभावनाको कुंठित कर दिया। उच्छृंखलता अपनी सीमा लाँघ गई। राजनीति आडम्बरका दूसरा नाम है, अपने निहित स्वार्थ की सिद्धिके लिए यह एक उपयोगी हथियार है, भोलीभाली जनताको बरगलानेकी वस्तु है, यह अस्वस्थ धारणा व्याप्त होती गई जिससे जनताकी आशाओंपर तुशारापात होगया। नेपालके राजनीतिक आकाशमें आशङ्का, आफत और अविश्वासके काले बादल छाने लगे।

डूबतेमें तिनकेका सहारा लेकर जनताने अपनी बची-खुची आशाओं की धरोहर निर्वाचित सरकारपर रख छोडी थी, आम चुनावद्वारा सत्तारूढ होनेवाली सरकार इस दुरावस्थाको समाप्तकर देशोत्थानमें सहायक होगी यही सभी की आशा थी। परंतु आशा निराशामें परिणित होगई। वही पुरानी डफली और वही पुराना राग दुहराया जाने लगा। उच्छृं-

ऋखलता फिर दिखाई पडने लगी । राष्ट्रिय भावनाओंके प्रति उपेक्षा बर्ती जाने लगी । भ्रष्टाचारका बोलवाला हुआ और बहती गंगामें हाथ धोकर कितनोंनें घरबार, जमीन जायदाद और ओहदे अपने लिए सुरक्षित करलिए । जनताके सुख दुःखकी पूछ किसीको नरही । व्यक्तिगत स्वार्थपूर्तिका घुडदौड शुरू हुआ । शक्ति हथियानेके लिए छीना झपटी होने लगी । चाटुकारोंकी बनआई । देश, संस्कृति, राष्ट्रिय परम्परा, राष्ट्रिय एकता, राष्ट्रिय गौरव, राष्ट्रिय चरित्र तथा अनुशासनकी उपेक्षा की गई । नेपाली जीवन, जाति एवं जनताको समझनेका प्रयास नहीं हुआ । संसद एवं संसदीय प्रणाली हाथीके दाँत जैसे दिखावटी प्रतीत हुए । नकली विदेशी नाराओं की बिना पर शासन प्रणाली चलानेका अपरिपक्व प्रयोग किया जाने लगा । नेपालीत्वके प्रतिकूल काम कारवाइ प्रारम्भ किए गए । देशके अस्तित्वपर आँच आनेकी सम्भावना दिखाई पडने लगी । साम्प्रदायिक भेदभाव तथा कृत्रिम वर्गभावनाको उभाडा गया । इस प्रकारसे उत्तेजित एवं प्रोत्साहित साम्प्रदायिक भेदभाव तथा वर्गीय संघर्षने देशकी एकता और अस्तित्वको मटियामेट करनेकी साजिशको पर्दाफास करदिया । इसके फलस्वरूप बझांग, दाँग, बाग्लुङ्ग, गोरखा तथा नुवाकोटमें अराजकताकी आग धधक उठी । असुरक्षा, अशान्ति और असंतोषकी लहर देशके एक कोने से दूसरे कोनेतक फैलगई । गृहकलह तथा गृहयुद्धकी आशंका से उद्वीग्नता और बेचैनी पैदा हुई । शंका–उपशंकाकी दूषित हवा बहने लगी । अवश्यम्भावी रूपसे देशके समक्ष एक भीषण परिस्थिति और खतरा

उपस्थित होनेकी सम्भावना दिखाई पडी । घटनाक्रममे ऐसे संकेत स्पष्ट दिखाई देने लगे जिनमें देशके अस्तित्वके लुप्त होनेके लक्षण विद्यमान थे । यही कारण है कि श्री ५ महाराजाधिराजको देशके अस्तित्व, राष्ट्रियता, देशप्रेम, संवैधानिक कर्तव्य एवं देशकी परिस्थितिसे बाध्य होकर पिछले साल दिसम्बरकी १५ तारीखके दिन एक ऐतिहासिक कदम उठाना पडा ।

राष्ट्रिय माँग एवं ऐतिहासिक आवश्यकताकी पूर्तिके रूपमें १५ दिसम्बर, १९६० का शाही कदम हमारे समक्ष उपस्थित हुआ है । विगत दस वर्षकी बर्बादी तथा नुक्सानी के कटु अनुभवसे जो ऐतिहासिक शिक्षा हमें प्राप्त हुआ है उससे हम अच्छी तरह जान गए है कि देशकी परिस्थिति, परम्परा, जलवायु तथा वातावरणके अनुपयुक्त कोई भी वाद, व्यवस्था एवं परिपाटी देशके लिए हितकर सिद्ध नहीं होता । हमारे देशमें जरा अविकसित तथा निम्नस्तरीय आर्थिक, शैक्षिक एवं प्रशासनीक व्यवस्था वरकरार है वहाँ संसदीय शासन शासन प्रणालीका राजनीतिक प्रयोग किसप्रकार विलकुल असफल, अरुचिकर और खतरनाक प्रमाणित हुआ यह तथ्य हमारे समाने है । सच कहा जाय तो प्रजातंत्र किसी खास एक उपरी आवरण और ढांचेमे सीमित रहने की वस्तु नहीं । प्रत्येक देशकी परम्परा, संस्कृति, धर्म, भावना, अवस्था, इतिहास, आवश्यकता तथा वास्तविकताद्वारा प्रजातंत्रका वाह्य आवरण और ढांचा प्रभावित तथा निर्धारित रहता है । प्रत्येक प्रजातान्त्रिक देशमें प्रजातन्त्रके वाह्य आवरण और

ढांचे अलग अलग रूपसे गढाजाना नितान्त स्वाभाविक है। एक प्रजाताँत्रिक देशमें प्रजातंत्र को जो वाह्य आवरण और ढांचेका निर्माण हुआ है वह हूबहू उसी रूपमें दूसरे प्रजाताँत्रिक देशमें ढूंढनेपर भी हम नहीं पा सकते। उदाहरणके लिए यदि बिलायतमें संसदीय प्रणालीकी परम्परा है, अमेरिकामें संसदीय प्रणालीके बदले अध्यक्षात्मक प्रणालीको अपनाया गया है। प्रजातन्त्रके वाह्य आवरण स्थानीय वातावरण तथा आबहवा के अनुसार बनते हैं, अतः सभी प्रजाताँत्रिक देशोंमें ऐसे वाह्य आवरण के अलग अलग राष्ट्रिय संस्करण प्रचलित दिखाई देते हैं।

हमारे देशमें भी अपनी ही परिस्थिति, परम्परा, जलवायु तथा वातावरणके उपयुक्त प्रजातंत्रके उपरी आवरण के निर्माण होने की स्वाभाविक क्रिया किसीके रोके रूकनेवाली नहीं थी। यही कारण है कि नेपाली जीवन, जागृति, जातीय मनोभावना, आकाँक्षा, वास्तविकता तथा राष्ट्रिय आवश्यकताके अनुरूप उपयुक्त नहोनेके कारण प्रजातंत्रकी संसदीय ढांचा नेपालकी भूमिमे जड नहीं जा सकी यह हम स्पष्टतया प्रतीत हो गया।

उपरसे लादे गए आधारमें अनेक कोशिश और प्रयासके बावजूद भी संसदीय आवरणका इस देशमें फलफूल सकना संभव नहीं था। हमारी राष्ट्रिय भावना, आस्था, विश्वास, परम्परा जातीय प्रेरणा तथा देशकी वास्तविक आवश्यकताके पौष्टिक राष्ट्रिय स्रोतसे स्वभावतः वञ्चित रखनेका जो अनुकरण किया गया उससे संसदीय प्रणाली की जड अनिवार्य

रूपसे सूखजाना अवश्यम्भावी था। राष्ट्रिय आकाँक्षा, जातीय जागृति तथा देशके व्यक्तित्वसे सामंजस्य नरखनेवाले संसदीय आवरणको बचाए रखना ऐतिहासिक माँगकी उपेक्षा कराना था। असाधारण खींचला, अनावश्यक चर्चाको प्रश्रय देनेवाले अप्राकृतिक रूपसे विवादग्रस्त संसदीय प्रणाली-द्वारा किसी भी समस्याका समुचित समाधान निकलना संभव नहीं था। अतः इन सभी तथ्यका सामूहिक मूल्याँकनकर पिछलेसाल १५ दिसम्बर १९६० के दिन जो शाही कदम उठाया गया वह हमारे समक्ष ऐतिहासिक आवश्यकताके रूपमें उपस्थित हुआ है।

जो यह समझते हैं कि बाहरी आवरणका नष्ट होना ही प्रजातंत्रकी समाप्ति है, वे सर्वथा भूममें है। प्रजातंत्रके अनेक प्रकारके वाह्य आवरण होते हैं। देशकी संस्कृति, परम्परा, जलवायु, वातावरण, राष्ट्रिय मनोभावना, आकाँक्षा, समयकी माँग तथा देशके व्यक्तित्वके विकासकी आवश्यकताके सामूहिक दृष्टिकोणसे यह कहना सही होगा कि इन वाह्य आवरणोंमें हमारे देश के लिए पंचायती प्रणाली ही उपयुक्त प्रमाणित हुई है। संक्षिप्तमें, जनताकी इच्छाके अनुसार जनताकी चौतर्फी विकास और उत्थानको प्रमुख लक्ष निर्धारितकर जनसहयोगसे जो शासन व्यवस्था चलाई जाती है उसीमें प्रजातन्त्रका सार और सत्व निहित है। अतः इस तर्कमें कोई सत्यता नहीं कि संसदीय प्रणाली समाप्त होते ही प्रजातन्त्र समाप्त होता है और संसदीय प्रणालीकी स्थापनासे ही प्रजातन्त्रका प्रादुर्भाव होता है। हमारी संस्कृति, राष्ट्रिय परंपरा,

जातीय आकाँक्षा एवं धर्म, मानवीय मर्यादा, व्यक्तिगत प्रतिष्ठा, स्वतन्त्रता तथा समानताके सिद्धान्तपर आधारित है। हमारी संस्कृति, परंपरा, आकाँक्षा तथा धर्मसे पंचायत प्रणाली की इतनी समानता और सामञ्जस्य है कि वह प्रजा-तन्त्रके विपरीत जासकती है इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। व्यावहारिकता, उपयोगिता तथा आत्मीयताके दृष्टिकोणसे नेपालकी आत्माकी वास्तविक अभिव्यक्ति पञ्चायत प्रणालीके अतिरिक्त अन्य किसी प्रणालीद्वारा नहीं हो सकती। अपने तौर तरीकेसे, अपनी रुचिके अनुसार अपने व्यक्तित्वके चौतर्फी विकासके लिए लोक–कल्याणकारी व्यवस्थाकी नींव डालनेके लिए शोषण रहित समाजकी स्थापनाके हेतु, एक सुखद युगको आमन्त्रित करनेके लिए एवं जागृतिकी ज्योति फैलाकर जनशक्तिको निर्माणपथमें अग्रसर करनेके लिए कटिबद्ध नेपालके हेतु पंचायती प्रणालीके अतिरिक्त अन्य कोई प्रणाली उपयुक्त नहीं होसकती। पंचायती प्रणालीमें नेपालीत्व निहित है। इस प्रणालीमें नेपाली महत्वाकाँक्षा प्रतिबिम्बित हुई है। इस प्रणाली की स्मृति तथा अनुभव की छाप हमारी जातीय परंपरामें अमिट रूपसे अंकित है। देशकी जलवायु इसके लिए उपयुक्त है। यह हमारे राष्ट्रिय स्वप्नकी आधारशीला होगी। नेपाली जीवन, जाति, राष्ट्रिय जागृति तथा जातीय जोशको इस प्रणालीद्वारा आधार और भरोसा प्राप्त हुआ है।

दिसम्बर १५, १९६० का शाही कदम किसी देश, वाद या व्यक्तिके प्रति प्रतिशोध या द्वेषकी भावनासे प्रेरित होकर नहीं उठाए गया था।

भारस्वरूप लदी हुई व्यवस्थासे जो देश कुचला गया था, सामंती प्रथासे शोषित तथा अराष्ट्रिय तत्वद्वारा बरगलाया गया था, उस देशने अपने समस्त व्यवधानको उखाड फेंकने के लिए तथा अपने असली अस्तित्व ढूंढ निकालनेके लिए जो प्रयास किए उसके चलते यह ऐतिहासिक कदम उठाना नितान्त आवश्यक था। अपने तरीकेसे आगे बढकर राष्ट्रिय परंपरा, गोरव, एकता तथा आकाँक्षाके अनुरूप स्थितिकी सृजनाकर शोषण रहित समाजकी स्थापना करनेकी प्रेरणा से ही शाही कदम उठाए गए थ। जो राष्ट्रिय स्वप्न सदियोंस साकार न हो-सके थे उन्हे संजोकर नेपाली जातिकी आकाँक्षा एवं इच्छा अनुसार उन्हीं के सक्रिय सहयोग तथा सद्भावनासे साकार करने की कंचन कामना के रूपमें शाही कदम हमारे समक्ष उपस्थित हुआ। यही कारण है कि प्रत्येक नेपालीने शाही कदमको खुले दिलसे समर्थन एवं बुलंद कण्ठसे जिसप्रकार सराहना की उसकी ध्वनि मेचीसे महाकालीतक गूंज उठी। राष्ट्रिय एकताके प्रतीक, राष्ट्रिय भावनाके स्रोत तथा राष्ट्रिय अस्तित्वके आधार स्थंभ राष्ट्रनायक श्री ५ महाराजाधिराजने इस नवीन युगका नेतृत्व स्वयं ग्रहण किया, अतः देशके इति-हासमें एक क्रान्तिकारी विचार, वातावरण एवं व्यवहार दिखाई पडना स्वाभाविक है। श्री ५ महाराजाधिराजके आव्हानसे जनसहयोग, जनबल, जनताकी सद्भावना तथा जनताकी उमंग स्पष्टतया अभूतपूर्व रूपसे सर्वत्र बढगई है। यह निर्विवाद रूपसे कहा जा सकता है कि वर्गीय संगठन, शोषण रहित आर्थिक नीति, सामाजिक न्याय तथा पंचायती

प्रजातन्त्रकी सफलतापर ही देशके अस्तित्वका विकास निर्भर करता है। यही कारण है कि राष्ट्रनायकद्वारा उठाए जानेवाले हर कदमको जी–जानलगाकर सफल करनेके लिए देश सम्पूर्ण शक्ति और जोश जुटारहा है। हमारे सुखद भविष्यकी कल्पनाके ठोस रूप लेने के एवं हमारे ऐतिहासिक सपनोंके साकार होनेके लक्षण दिखाई पड रहे हैं। संक्षिप्तमें, नेतृत्व विहीन नेपालको एक युगनेता प्राप्त हुआ है। उस नेताके आव्हानमें देशने निर्माणकी प्रेरणा प्राप्त की है। अतः देशका भविष्य उज्ज्वल है।

परंतु परिवर्तनशील परिस्थितिके प्रवाहके प्रति नासमझी रखनेवाले, स्वभावतः अप्रजातान्त्रिक मनोवृत्तिवाले, वर्षों तक सामंती शोषणसे पलनेवाले, देशके कोषको खालीकर विदेशी बैंकको भरनेवाले, देशवासियोंके खूनपसीने की गाढी कमाईको रास–रंगमें उडानेकी जिनकी आदत है तथा जो बुरी तरह अराष्ट्रिय, प्रतिक्रियावादी व्यभिचारके दलदलमें फंस गए है, सामंती प्रथा के कुछ नगण्य भग्नावशेष और उनके मुठ्ठीभर पिछलगुए दल्लालोंके लिए अपने निजी स्वार्थपर आघात पडते देख प्रगति और देशनिर्माणका यह नयाँ क्रांतिकारी युग अरुचिकर प्रतीत होना स्वाभाविक है। उनकी काली करतूतों, अपराधी चेहरे, अमानुषिक व्यवहार तथा उनके नारकीय इतिहाससें देशवासी चिरकालसे परिचित हैं। जनताकी दृष्टिसे गिरे हुए, देशवासियोंद्वारा दुत्कारे गए इन प्रतिक्रियावादियों और उनके दल्लालोंको जनताका समर्थन, सहयोग एवं सद्भावना प्राप्त करने के बदले विरोध, गाली तथा श्राप

मिलना स्वाभाविक था । उनके राष्ट्रघाती क्रियाकलापोंसे यह स्पष्टतया विदित हो गया है कि देश तथा जनताके प्रति बदलेकी भावना रखते हुए पुनः नेपालको सामन्ती शोषणकी चक्कीमें पीसने की कुनियतसें वे विदेश भग गए हैं । विदेशी भूमिमें पाँव जमाकर स्वदेशके भाग्य तथा अस्तित्वसे खिलवाड करनेपर उतारू ये राष्ट्रविरोधी ववीजलिंग, जयचन्द तथा मीर जाफरके असफल नेपाली संस्करण है । नेपालमें फलने फूलनेवाली नई जागृति, राष्ट्रिय भावना, जातीय जोश, प्रगतिशील विचारधारा, सामूहिक चेतना, पञ्चायती प्रजातन्त्र तथा शोषण रहित समाजकी परिकल्पना से अपने सामंती तथा प्रतिक्रियावादी निजी स्वार्थपर कुठाराघात होते देख ये देशद्रोही इतिहासकी माँग, समयकी आवश्यकता तथा राष्ट्रकी आकांक्षाको पूर्तिके विरुद्ध हरतरहसे व्यवधान उपस्थित करनेके हेतु निरर्थक दुस्साहस, चमगादडी चाल तथा गीदडभभकी दिखा रहे हैं । यही कारण है कि सुषुप्त नेपालके भाग्योदयके लिए, राष्ट्रिय गौरवके संरक्षणके लिए, नेपालीत्वके विकासके हेतु नेपालके सपनोंको साकार करनेके लिए तथा नेपाली की प्यास बुझानेके लिए जनताका समर्थन सहयोग और सद्भावनाके अनुरूप पवित्र राष्ट्रिय प्रेरणा से कार्यक्षेत्रमें पदार्पण करनेवाले युगनेता राष्ट्रनायक श्री ५ महाराजाधिराजके बहुमूल्य जीवनपर आघात करनेका दुष्प्रयास करनेमें भी इन स्वार्थान्ध, राष्ट्रघातियोंको कोई हिचकिचाहट नहीं हुई । नेपालको पुनः अपने पाओंतले रौंदकर, पीसकर और मिटयामेटकर अपने तुच्छ निजी स्वार्थके पुनरुत्थानके दुःस्वप्न

देखनेवाले इन सावनके अंधे सामन्त शोषक तथा देशद्रोहीयों-द्वारा इस प्रकारके कुप्रयास तथा कुकृत्य होना आश्चर्यकी बात नहीं।

हरदेशके इतिहासमें ऐसे देशद्रोहियोंकी काली कथाएं भरी पडी है। विदेशियोंके आश्रय और इशारोंपर ऐसे राष्ट्र-घाती बारबार षडयंत्र करते आए है। आपसी कलह, फट तथा वैमनस्य जहाँ व्याप्त था, जो देश छोटे छोटे राज्योंमें बंटा हुआ था उस नेपालको राष्ट्रियताके एक सूत्रमें पिरोनेवाले श्री ५ बडामहाराजा पृथ्वीनारायण शाहद्वारा उठाएगए ऐतिहासिक कदमको भी असफल करने के लिए राष्ट्रघाति-योंने इसी तरह मुगलानियाँ नवाब और इष्ट इण्डिया कंपनीका सहारा लेनेके लिए कुछ उठा नहीं रखा। दक्षिणपूर्वी एशियाई देशोंमें छाई साम्राज्यवाद की काली छाया सें अपने देशकी राज्यश्री की रक्षाकरनेका जो पवित्रउदेश्य हमारे पूर्वजोंने लियाथा उसके लिए भी उन्हें देशद्रोहियोंके दुष्प्रयासका सामना करना पडा और इसके चलते उन्हे अनेक कष्ट झेलना पडा। यह भी किसी से छिपा नहीं है कि विदेशी साम्राज्यवादका सहारा लेकर पलनेवाली शोषणप्रधान निरंकुश सामंती व्यवस्था से देशको मुक्त करनेके लिए १९५१ ई० में देश, नरेश तथा जनता ने जो त्याग, तपस्या और बलिदान किया उसे भी इन स्वार्थी देशद्रोहियोंने अनेक कुचक्र रचकर विफल बनानेका कुप्रयास किया। देशकी बरबादीमें अपनी भलाई समझनेवाले, देशकी विपन्नतामें अपनेको सम्पन्न समझनेवाले, देशवासि-योंकी बेइज्जतीमें अपनी इज्जत महसूस करनेवाले, देशकी

अवनतिमें अपनी उन्नति देखनेवाले तथा देशको पतनोन्मुख होते देख संतोषकी साँस लेनेवाले स्वार्थी देशद्रोहियोंद्वारा ऐसे देशघाती कार्यके सिवा अन्य कार्य होना भी संभव नहीं। संकुचित विचार, बदलेकी भावना, क्रोध एवं ईर्ष्याकी भावनासे पीडित होकर इन देशद्रोहियोंका पागलोंकी तरह बौखलाना स्वाभाविक है। क्योंकि नेपालमें एक ऐसे नए युगका प्रादूर्भाव हो रहाहै जिसमें देशविकासके लिए बाधाएं पैदाकर, व्यक्तिगत विचारकी अवहेलनाकर अब देशकी शक्ति, श्रम तथा सम्पत्तिके शोषणकी कत्तई गुंजाइश नहीं। अतः इन स्वार्थी देशद्रोहियों की विक्षिप्त खोपडीकी वाहियात उपज हिंसात्मक, ध्वंसात्मक तथा तोडफोड आदि की राष्ट्रघाती कारवाइयोंतक ही सीमित रह गई है। अपनी कार्यकी सिद्धिके लिए शान्तिपूर्वक राह चलते बटोहियोंको दाँतकाटना, नोच–खसोट करना और अनर्गल चिल्लपों मचाना ये पागल दिमागके साधारण एवं स्वाभाविक लक्षण नहीं तो और क्या है! इस कार्यमें किसीके लिए आश्चर्य और नवीनताकी बात नहीं रह गई है।

राष्ट्रिय एकताको अक्षुण रखने, देशका अस्तित्व बचाने तथा राष्ट्रकी स्वतन्त्रता के संरक्षण करनेके लिए किए गए ऐतिहासिक कर्तव्यके मार्गपर स्वार्थान्ध राष्ट्रघातियोंद्वारा समय समयपर जितनी बाधाएं उपस्थित की गई उन्हे सफलतापूर्वक हटानेके लिए हमारे पुरुषार्थी पूर्वजोंने जिस जोश, जागृति तथा शक्तिका गौरवमय परिचय दिया उससे हमें शिक्षा ग्रहण करना है। अपनी व्यक्तिगत सामंती तथा प्रतिक्रियावादी मृगतृष्णाको बुझानेके हेतु समयके प्रवाह तथा

देशविकासके स्रोतको मूदने की जो कुचेष्टा इन राष्ट्रघातियोंने की है उससे प्रत्येक नेपालीके हृदय पर ठेस लगना स्वाभाविक है। मेचीसे महाकालीतक गूंजती हुई जनताकी आवाज इन्हे अभिशाप दे रही है। हम किसीपर हमलावार नहीं होते, पर यदि हमपर कोई टूट पडे तो उसे मुँहकी खिलाने से पीछे भी नहीं हटते, यही हमारा ऐतिहासिक और साधारण स्वभाव है। इसी स्वभावके चलते नेपाली जाति सदा ज्वलन्त और जीवित रही है। पराए देशमें पाँव जमाकर ये राष्ट्रघाती तत्व नेपालमें उपद्रव मचा रहे हैं। इनकी हमलावार हरकतों से हमें बाध्य होकर अपने ऐतिहासिक स्वभावका परिचय देना पडा है। राष्ट्रिय भावना, जातीय गौरव, राष्ट्रिय आकाँक्षा, देशविकास तथा शोषण रहित समाजकी प्रेरणासे जागृत होकर समान हृदयसे देशभक्ति तथा समान रूपसे देशनिर्माणमें जुटी हुई एक करोड नेपाली जनता ऐसे देशद्रोहियोंकी इंटका जवाब पत्थरसे देना अच्छी तरह जानती है। अपने तुच्छ स्वार्थसे प्रेरित होकर राष्ट्रनिर्माणके पवित्र पथपर काँटोंके बीज बोनेवाले राष्ट्रघातियों के विरुद्ध प्रत्येक देशभक्त नेपाली घृणा, अफशोस एवं अभिशापकी भावना व्यक्त करनेसे बाज नहीं आए है। अनेक दुष्प्रयास तथा दुस्सासह के बावजूद भी शोषक सामंती व्यवस्थाके राष्ट्रघाती अवशेषोंका अवसान अवश्यम्भावी है। किसीके रोडे अटकाने से नेपालकी प्रगति नहीं रूक सकती, न किसीकी चाहने से नेपालका अस्तित्व ही मिट सकता है। शोषक सामंती पारिवारिक व्यवस्था के पुनरुत्थानके दिन लद गए। इतिहासकी माँग नहीं रूकेगी।

देशकी आवश्यकता पूरी होकर रहेगी। युगकी पुकार नहीं छिपेगी। राष्ट्रकी आवाज नहीं दबेगी। युगनेताका आव्हान विफल नहीं जा सकता। क्योंकि जो देश सदियोंसे दमन, शोषण, उत्पीडनका शिकार रहा उस देशमें राष्ट्रिय मनोरथ, देशविकास, देशनिर्माण तथा राष्ट्रिय जागृतिका वरदान लेकर एक नए युगका स्वर्ण बिहान हो रहा है।

फलतः हमारे देशके कोने कोनेमें, हमारे समाजके हर क्षेत्रमें तथा हमारे जीवनके हर पहलूमें देशनिर्माण के लिए हर एक क्रांतिकारी उत्साह और उमंग फैल गई है। इस उत्साह और उमंगसे प्रेरित होकर हमारी पिछडी हुई आर्थिक प्रणाली, गिरी हुई सामाजिक स्थिति, प्रतिकूल राजनीतिक परिपाटी तथा अस्वस्थ प्रशासनिक व्यवस्थामें समयानुरूप सुधार लाकर देशके व्यक्तित्वके विकासको हासिल करनेके लिए ठोस कदम उठाए गए है। ईन सुधारकी योजनाओंको सफल बनानेके लिए, समय, श्रम, शक्ति तथा सम्पत्तिकी आवश्यकता होगी ही। जनताका सहयोग, श्रमदान, अनुशासन, धैर्य तथा कर्तव्यपरायणताके बगैर इस प्रकारकी योजनाएं सफल नहीं हो सकती। परन्तु निजी स्वार्थकी पूर्तिके लिए गिरे, पिछडे और दयनीय अवस्थामें देश तथा देशवसियोंको दबाकर वर्षों मनमाने ढंगसे शोषण करनेकी जिनको चाट पड गई है उनका इस प्रकारके नए जोश देखकर परेशान होना लाजिमी था। यही कारण है कि देश तथा देशवासियोंको देशनिर्माणके निश्चित मार्गसे बिचलित करनेके लिए इस प्रकारके असंतुष्ट स्वार्थी प्रति-

कृयावादियोंने अपने लिए धन–सम्पत्ति जुटानेके फेरमें देशके खजानेको खाली किया और सारे धन बटोरकर कुनियतसे विदेशमें जा बसे। देशके अन्न जलसे संग्रहित शक्ति तथा देश वासियोंके खून पसीने की गाढी कमाईको ये प्रतिकृयावादी और उनके पिछलगुए दल्लाल देशको मटियामेट करनेके लिए राष्ट्रद्रोही कुकृत्यमें अपव्यकर रहे हैं; उनकी इस शेखी और दुष्प्रयासके प्रति देशवासियोंको सजग, सचेत तथा सतर्क होना है। जनताका श्रम, जोश, जागृति, सहयोग तथा सहायताके बिना दुनियाँका कोई भी देश अपनी स्वतन्त्रता की सुरक्षा और व्यक्तित्वका विकास नहीं कर सकता है। हमारे जैसे पिछडे देशकी स्वतन्त्रता, सुरक्षा तथा व्यक्तित्वके विकास की गहन जिम्मेदारीका भार तो जनताके कंधेपर ही है। अतः ऐसे देशघाती और उनके पिठ्ठू दल्लालों के छल-कपट, बहानेबाजी, बकवास तथा कुप्रचारको अच्छी तरह सोच समझकर देशके अस्तित्व, देशकी सार्वभौमिकता, देशकी सुरक्षा, देशविकास तथा देशनिर्माणके लिए त्याग, अनुशासन, धैर्य तथा वीरताके साथ संपूर्ण देशवासियोंद्वारा व्यक्तिगत तथा संगठित रूपमें श्री ५ की सरकारको सक्रिय सहयोग, सद्भावना और सहायता सहर्ष अर्पण करनेके लिए राष्ट्रिय कर्तव्यकी आवश्यकता आपडी है।

पिछले दो–चार महीनेसे अधिराज्यके भीतर विभिन्न भागमें अराष्ट्रिय तत्वोंने जो लूटखसोट चोरी डाकेजनी, खून खराबी और तोडफोडकी कारवाइयाँ की है और इसके चलते जो हंगामा खडा हुआ है उसके प्रति जनतामें भ्रमकी

गुंजाइश न रह जाय इस हेतु मैं सर्वसाधारण जनताकी जानकारीके लिए कुछ कहना चाहता हूं।

देशकी शान्तिपूर्ण स्थितिमें खलल डालने, देशवासियोंमें आतंक फैलाने तथा सुमार्गमें अग्रसर देशवासियोंको विचलित करने, व्यक्तिगत स्वार्थको हासिल करनेवाले अराष्ट्रिय विध्वंसकारी तत्व अधिराज्यके कुछ स्थानोंमें सीमाके पार भारतसे घुसकर लुकछिप सरकारी खजना लूटना, सरकारी कचहरियोंमें आग लगाना, जनताके धनपर डाका डालना, चोरी करना, जनताके घर–आवासमें आग लगाना, स्त्रियोंकी इज्जत आबरू लूटना, रास्ते और पुलको तोडफोड देना, संचारके साधनको नष्ट करना, लोगोंकी हत्या करना आदि अनेकों निन्दनीय तथा जघन्य अपराध करनेमें संलग्न है। इन अपराधोंके भागीदार दण्डसे बचनेके लिए सीमाके उसपार भाग जाते हैं। सर्वविदित उदाहरण है कि जनकपुरमें श्री ५ महाराजाधिराजके शरीरपर आघात पहुंचानेकी कुचेष्टा कर अपराधी सीमापार भाग खडे हुएथे।

इन घटनाओंके क्रममें भारत सीमा पारसे घुसकर देशघाती कार्य करनेवाले देशद्रोहियोंके आठ जवान मारे गए है और भारत सीमापारसे आनेवाले हथियार तथा विष्फोटक पदार्थ सहित १६० व्यक्तियोंको गिरफ्तार किया गया है। ६ व्यक्ति घायल है। अभीतक श्री ५ की सरकारके पुलिसके दो जवान नुकसान हुए हैं और ५ जवान घायल हैं। गिरफ्तार लोगों पर आवश्यक कारवाइ की जा रही है।

गिरफ्तार व्यक्तियों ने अपने बयानमें कहा है– "हम लोग

नेपालकी सीमाके निकट भारतमें रहकर संगठन करते हैं और भारतीय सीमासे नेपालमें घुसकर तोडफोडके कार्य कर भारतकी ओर भाग जाते हैं।" भारत सरकारकी ओरसे सीमापर कडी निगरानी की जायगी इस आशयका समाचार श्री ५ की सरकारको प्राप्त हुआ है तथा श्री ५ की ओर से भी इसके लिए आवश्यक व्यवस्था की जा चुकी है। देशहितको ध्यानमें रख श्री ५ की सरकारकी ओरसे शाही सेना, पुलिस तथा मिलिशियाद्वारा भी अत्यन्त सराहनीय कार्य किए जा रहे हैं।

देशके कोने कोनेसे विध्वंसकारियोंकी कार्यवाहियों के प्रति भर्त्सनाके संदेश प्राप्त हुए हैं। उन्हें दमन करनेके लिए स्थानीय जनता कटिबद्ध है तथा उनसे पर्याप्त मात्रा में सहयोग प्राप्त हो रहे हैं। इसके अलावे ऐसे विध्वंसकारियोंको अपने जिले वा इलाकेमें घुसपैठ करनेसे रोकने तथा घुसनेपर दमन करनेके लिए व्यक्तिगत या सामूहिक रूपमें श्री ५ की सरकारको और अधिक सहयोग प्रदान करनेके लिए अनुरोध किया जाता है। अतः किसी भी देशभक्त नेपालीको अनर्गल कुप्रचारकी ओर ध्यान नदेनेके लिए आजतककी स्थितिका वास्तविक विवरण सबके समक्ष प्रस्तुत किया गया है।

जय नेपाल।

सिंहदरबार सचिवालय
काठमाडौं।
२०१८।११।५।६

प्रथमबार, २०००
वि. सं. २०१८.

श्री ५ को सरकार राष्ट्रिय निर्देशन मन्त्रालय,
प्रचार तथा प्रसार विभाग ।

गोरखापत्र छापाखानामा मुद्रित ।